IJISEM
INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIONS IN SCIENCE ENGINEERING AND MANAGEMENT

International Journal of Innovations In Science Engineering And Management

चंदेरी के हथकरघा उद्योग में महिला उद्यमी एवं पारिवारिक समायोजन: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. सुनीता बाणकार[1], प्रियंका शर्मा[2]

[1]सहायक प्राध्यापक, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन, मध्य प्रदेश
[2]शोधार्थी, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन, मध्य प्रदेश

OPEN ACCESS

Volume: 5

Issue: 4

Month: November

Year: 2026

ISSN: 2583-7117

Published: 06.11.2026

Citation:
डॉ. सुनीता बाणकार, प्रियंका शर्मा "चंदेरी के हथकरघा उद्योग में महिला उद्यमी एवं पारिवारिक समायोजन: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन" International Journal of Innovations In Science Engineering And Management, vol.5, no.4, 2026.

DOI:
10.69968/ijisem.2026v5i4266-271

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

सारांश

चंदेरी का हथकरघा उद्योग मध्य प्रदेश की पारंपरिक वस्त्र निर्माण कला, सांस्कृतिक विरासत तथा स्थानीय आजीविका का एक महत्वपूर्ण आधार है। चंदेरी की साड़ियों की विशिष्ट बुनाई, हल्की बनावट, रेशम एवं सूती धागों का उपयोग तथा जरी का कार्य इसे विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं। इस उद्योग में महिलाओं की भागीदारी उत्पादन, धागे की तैयारी, डिजाइन संबंधी गतिविधियों, विपणन तथा पारिवारिक व्यवसाय के संचालन के विभिन्न रूपों में दिखाई देती है। महिला उद्यमिता का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी महिलाओं की सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्वतंत्रता तथा पारिवारिक निर्णयों में सहभागिता से संबंधित होती है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य चंदेरी के हथकरघा उद्योग में महिला उद्यमियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति तथा उनके पारिवारिक समायोजन का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में महिला सशक्तीकरण, भूमिका संघर्ष, लैंगिक श्रम-विभाजन तथा परिवार और अर्थव्यवस्था के पारस्परिक संबंधों को विश्लेषण का आधार बनाया गया है।

शोध-पत्र में 60 महिला उद्यमियों के प्राथमिक आँकड़ों की सारणियाँ प्रस्तुत की गई हैं। इसके अतिरिक्त चंदेरी के हथकरघा उद्योग से संबंधित उपलब्ध द्वितीयक साहित्य एवं सरकारी दस्तावेजों को भी विश्लेषण में सम्मिलित किया गया है।

प्रमुख शब्द: महिला उद्यमिता, चंदेरी हथकरघा, पारिवारिक समायोजन, महिला सशक्तीकरण, भूमिका संघर्ष, लैंगिक श्रम-विभाजन।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में पारंपरिक हस्तशिल्प एवं हथकरघा उद्योग केवल आर्थिक गतिविधियाँ नहीं हैं, बल्कि वे स्थानीय संस्कृति, पारिवारिक परंपराओं, कौशल हस्तांतरण तथा सामाजिक संबंधों से भी जुड़े हुए हैं। इन उद्योगों में परिवार एक महत्वपूर्ण उत्पादन इकाई के रूप में कार्य कर सकता है, जहाँ परिवार के विभिन्न सदस्य उत्पादन, कच्चे माल की व्यवस्था, विपणन तथा घरेलू कार्यों में अलग-अलग भूमिकाएँ निभाते हैं।

मध्य प्रदेश का चंदेरी क्षेत्र अपनी विशिष्ट वस्त्र निर्माण परंपरा के लिए प्रसिद्ध है। चंदेरी की साड़ियों में रेशम, सूती धागों तथा जरी के कार्य का विशेष महत्व है। पारंपरिक डिजाइन, हल्की बनावट और विशिष्ट बुनाई तकनीक इस वस्त्र को अलग पहचान प्रदान करती है। चंदेरी साड़ियों को भारत सरकार के भौगोलिक संकेतक (GI) संबंधी अभिलेखों में पंजीकृत उत्पाद के रूप में मान्यता प्राप्त है।

हथकरघा उद्योग में महिलाओं की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन इसलिए आवश्यक है क्योंकि महिलाओं का आर्थिक योगदान हमेशा उनके स्वतंत्र आर्थिक अधिकारों या व्यवसाय के स्वामित्व में परिवर्तित नहीं होता। कई पारंपरिक पारिवारिक व्यवसायों में उत्पादन संबंधी कार्यों के साथ महिलाओं से घरेलू जिम्मेदारियों के निर्वहन की अपेक्षा भी की जाती है।

पारिवारिक समायोजन का अर्थ केवल परिवार के साथ रहने या पारिवारिक संबंधों में सामान्य सामंजस्य बनाए रखने तक सीमित नहीं है। इसमें व्यावसायिक एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच तालमेल, घरेलू कार्यों का वितरण, परिवार के सदस्यों का सहयोग तथा निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिला की भागीदारी शामिल है।

प्रस्तुत अध्ययन चंदेरी के हथकरघा उद्योग में महिला उद्यमिता एवं पारिवारिक समायोजन के संबंधों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

शोध समस्या का कथन

चंदेरी का हथकरघा उद्योग स्थानीय आजीविका, पारंपरिक कौशल तथा सांस्कृतिक पहचान से जुड़ा हुआ है। इस उद्योग में महिला उद्यमियों की भूमिका का अध्ययन करते समय यह समझना आवश्यक है कि उनकी आर्थिक गतिविधियाँ परिवार के भीतर उनकी स्थिति, निर्णय लेने की क्षमता तथा घरेलू जिम्मेदारियों के साथ किस प्रकार संबंधित हैं।

इस संदर्भ में प्रमुख शोध समस्या यह है कि चंदेरी के हथकरघा उद्योग में महिला उद्यमियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, पारिवारिक सहयोग, घरेलू श्रम-विभाजन तथा व्यवसाय और परिवार के बीच समायोजन को किस प्रकार समझा जा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. महिला उद्यमियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना।
2. महिला उद्यमिता और पारिवारिक समायोजन के बीच संबंधों को समझना।
3. महिला उद्यमियों की सामाजिक /आर्थिक निर्णयों में भागीदारी एवं आय पर नियंत्रण के महत्त्व का विश्लेषण करना।

परिकल्पना

शून्य परिकल्पना (H_0): पारिवारिक सहयोग एवं पारिवारिक समायोजन के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण संबंध नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना (H_1): पारिवारिक सहयोग एवं पारिवारिक समायोजन के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण संबंध है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें चंदेरी के हथकरघा उद्योग, महिला उद्यमिता तथा पारिवारिक समायोजन से संबंधित विषयों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन की प्रस्तावित संरचना में प्राथमिक आँकड़ों के लिए साक्षात्कार अनुसूची तथा द्वितीयक आँकड़ों के लिए सरकारी दस्तावेजों, पुस्तकों और शोध-पत्रों का उपयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन का क्षेत्र चंदेरी तहसील, जिला अशोकनगर, मध्य प्रदेश है। यह क्षेत्र अपनी पारंपरिक साड़ी निर्माण कला और हथकरघा उद्योग के लिए जाना जाता है।

नमूना विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सुविधाजनक नमूनाकरण विधि का उपयोग किया गया। इस विधि के अंतर्गत चंदेरी क्षेत्र में उपलब्ध तथा शोधकर्ता से आसानी से संपर्क स्थापित कर सकने वाली 60 महिला उत्तरदाताओं का चयन किया गया। उनसे साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से महिला उद्यमिता, पारिवारिक सहयोग एवं पारिवारिक समायोजन से संबंधित प्राथमिक आँकड़े एकत्रित किए गए।

आँकड़ों के स्रोत

प्राथमिक स्रोत:- महिला उद्यमियों की साक्षात्कार अनुसूची।

द्वितीयक स्रोत:

- विकास आयुक्त, हथकरघा, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार के दस्तावेज।
- भौगोलिक संकेतक पंजीकरण संबंधी आधिकारिक अभिलेख।
- अशोकनगर जिले की औद्योगिक प्रोफाइल।
- महिला सशक्तीकरण एवं लैंगिक श्रम-विभाजन से संबंधित प्रकाशित साहित्य।

आँकड़ों के विश्लेषण की विधि

आँकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति, प्रतिशत, काई-वर्ग परीक्षण, Fisher–Freeman–Halton Exact Test तथा विषयगत व्याख्या का उपयोग किया गया है।

साहित्य समीक्षा

Kabeer (1999): महिला सशक्तीकरण

Naila Kabeer के शोध-पत्र Resources, Agency, Achievements: Reflections on the Measurement of Women's Empowerment में महिला सशक्तीकरण को संसाधनों, निर्णय लेने की क्षमता तथा प्राप्त परिणामों के संदर्भ में समझाया गया है।

यह दृष्टिकोण चंदेरी के हथकरघा उद्योग में महिला उद्यमिता के अध्ययन के लिए उपयोगी है। उत्पादन में भागीदारी या आय अर्जन को ही सशक्तीकरण का पर्याप्त प्रमाण नहीं माना जा सकता। यह आवश्यक है कि महिलाओं को वित्तीय संसाधनों तक कितनी पहुँच प्राप्त है, वे आय का उपयोग कैसे करती हैं तथा व्यवसाय संबंधी निर्णयों में उनकी कितनी भागीदारी है।

Hochschild और Machung (1989): कार्य एवं परिवार

Arlie Russell Hochschild और Anne Machung की पुस्तक The Second Shift: Working Parents and the Revolution at Home रोजगार तथा घरेलू जिम्मेदारियों के बीच संबंधों को समझने के लिए उपयोगी है।

यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी करने वाली महिलाओं पर घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी भी बनी रह सकती है। इससे कार्य और परिवार के बीच समय प्रबंधन तथा जिम्मेदारियों के संतुलन की चुनौती उत्पन्न हो सकती है।

Merton (1957): सामाजिक संरचना एवं भूमिकाएँ

Robert K. Merton की पुस्तक Social Theory and Social Structure सामाजिक संरचना तथा सामाजिक भूमिकाओं के अध्ययन में महत्त्वपूर्ण सैद्धांतिक आधार प्रदान करती है।

महिला उद्यमियों को व्यवसाय संबंधी जिम्मेदारियों और पारिवारिक अपेक्षाओं के बीच तालमेल स्थापित करना पड़ सकता है। जब दोनों प्रकार की भूमिकाओं की माँग एक ही समय पर पूरी करना कठिन हो, तो भूमिका संघर्ष उत्पन्न हो सकता है।

भारत सरकार: चंदेरी साड़ियों का भौगोलिक संकेतक

भारत सरकार के भौगोलिक संकेतक अभिलेखों में चंदेरी साड़ियों को पंजीकृत उत्पाद के रूप में मान्यता दी गई है। यह मान्यता उत्पाद की विशिष्ट भौगोलिक पहचान तथा पारंपरिक विशेषताओं के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण है। GI पंजीकरण अपने आप में महिला उद्यमियों की आय में वृद्धि या उनके आर्थिक सशक्तीकरण का प्रमाण नहीं है। इसके प्रभावों का अलग से अध्ययन आवश्यक है।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय: अशोकनगर की औद्योगिक प्रोफाइल

अशोकनगर जिले की औद्योगिक प्रोफाइल में चंदेरी के हथकरघा साड़ी क्लस्टर से संबंधित जानकारी उपलब्ध है। प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रारंभिक मसौदे में इस प्रोफाइल के आधार पर 3,572 करघों तथा 25–30 करोड़ रुपये के अनुमानित कारोबार का उल्लेख किया गया है।

साहित्य समीक्षा के प्रमुख बिंदु

उपलब्ध साहित्य के आधार पर निम्नलिखित बिंदु सामने आते हैं:

1. महिला सशक्तीकरण का मूल्यांकन संसाधनों, निर्णय लेने की क्षमता तथा उपलब्धियों के आधार पर किया जाना चाहिए।
2. आर्थिक गतिविधियों के साथ घरेलू जिम्मेदारियों का निर्वहन महिलाओं के समय और श्रम को प्रभावित कर सकता है।
3. पारिवारिक सहयोग महिला उद्यमियों के व्यवसाय संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
4. चंदेरी के महिला उद्यमियों के पारिवारिक समायोजन पर स्थानीय प्राथमिक अध्ययन आवश्यक है।

चंदेरी का हथकरघा उद्योग पारंपरिक कौशल, सांस्कृतिक पहचान तथा स्थानीय आजीविका से जुड़ा है। इसकी साड़ियों में विशिष्ट बुनाई, पारंपरिक डिजाइन तथा रेशम एवं सूती धागों के उपयोग का विशेष महत्त्व है।

प्राथमिक आँकड़ों का विश्लेषण

आयु के आधार पर वर्गीकरण

सारणी 1: महिला उद्यमियों का आयु वर्ग के आधार पर वितरण

आयु वर्ग (वर्ष)	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
20–30 वर्ष	12	20.00
31–40 वर्ष	20	33.33
41–50 वर्ष	18	30.00
51 वर्ष एवं अधिक	10	16.67
कुल	60	100.00

व्याख्या: सारणी में 31–40 वर्ष आयु वर्ग की महिलाओं का अनुपात सर्वाधिक 33.33 प्रतिशत है। इसके बाद 41–50 वर्ष आयु वर्ग की महिलाओं का अनुपात 30 प्रतिशत है।

शैक्षणिक स्थिति

सारणी 2: शैक्षणिक स्थिति के आधार पर वितरण

शैक्षणिक स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
निरक्षर	8	13.33
प्राथमिक	12	20.00
माध्यमिक	18	30.00
उच्च माध्यमिक	10	16.67
स्नातक एवं उससे अधिक	12	20.00
कुल	60	100.00

व्याख्या: आँकड़ों में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त महिलाओं का अनुपात 30 प्रतिशत है। उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त महिलाओं का अनुपात 16.67 प्रतिशत है। शैक्षणिक स्थिति व्यवसाय प्रबंधन, वित्तीय साक्षरता तथा बाजार संबंधी जानकारी प्राप्त करने की क्षमता के अध्ययन में महत्वपूर्ण है।

वैवाहिक स्थिति

सारणी 3: वैवाहिक स्थिति के आधार पर वितरण

वैवाहिक स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
विवाहित	42	70.00
अविवाहित	8	13.33
विधवा	6	10.00
अन्य	4	6.67
कुल	60	100.00

व्याख्या: सारणी में विवाहित महिलाओं का अनुपात 70 प्रतिशत है। वैवाहिक स्थिति का अध्ययन पारिवारिक जिम्मेदारियों, घरेलू कार्यों के वितरण तथा व्यवसाय के लिए उपलब्ध समय को समझने में उपयोगी है।

पारिवारिक सहयोग

सारणी 4: व्यवसाय संचालन में पारिवारिक सहयोग का वितरण

पारिवारिक सहयोग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
पूर्ण सहयोग	28	46.67
आंशिक सहयोग	22	36.67
सीमित सहयोग	06	10.00
सहयोग का अभाव	04	6.67
कुल	60	100.00

व्याख्या: सारणी में 40 प्रतिशत महिलाओं को पूर्ण पारिवारिक सहयोग तथा 36.67 प्रतिशत महिलाओं को आंशिक सहयोग प्राप्त होता है । इस सारणी से व्यवसाय संचालन में परिवार की भूमिका को समझा जा सकता है। पारिवारिक सहयोग में घरेलू कार्यों में सहायता, बच्चों की देखभाल, कच्चे माल की व्यवस्था, व्यवसाय के लिए समय उपलब्ध कराना तथा आर्थिक निर्णयों में सहयोग शामिल हैं।

आर्थिक निर्णयों में भागीदारी

सारणी 5: आर्थिक निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी का वितरण

निर्णय लेने में भागीदारी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
स्वयं निर्णय लेती हैं	18	30.00
परिवार के साथ मिलकर निर्णय लेती हैं	26	43.33
सीमित भागीदारी	12	20.00
निर्णयों में भागीदारी नहीं	4	6.67
कुल	60	100.00

व्याख्या: सारणी में 43.33 प्रतिशत महिलाएँ परिवार के साथ मिलकर आर्थिक निर्णय लेने वाली श्रेणी में हैं, जबकि 30 प्रतिशत महिलाएँ स्वयं निर्णय लेने वाली श्रेणी में हैं। यह आयाम महिला सशक्तीकरण के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है।

घरेलू कार्यों का वितरण

सारणी 7: घरेलू जिम्मेदारियों के वितरण का वर्गीकरण

घरेलू कार्यों की स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
अधिकांश कार्य स्वयं करती हैं	28	46.67
परिवार के साथ कार्य साझा करती हैं	20	33.33
अधिकांश कार्य परिवार के अन्य सदस्य करते हैं	7	11.67
अन्य व्यवस्था	5	8.33
कुल	60	100.00

व्याख्या: सारणी में 46.67 प्रतिशत महिलाओं के अधिकांश घरेलू कार्य स्वयं करने की में स्थिति है। ऐसी स्थिति में व्यवसाय और घरेलू कार्यों के बीच समय प्रबंधन महत्वपूर्ण होता है। घरेलू कार्यों का साझा वितरण महिला उद्यमियों को व्यवसाय संचालन के लिए अतिरिक्त समय प्रदान करता है।

व्यवसाय संचालन में प्रमुख कठिनाइयाँ

सारणी 8: व्यवसाय संचालन में प्रमुख कठिनाइयों का वितरण

प्रमुख कठिनाई	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
पूँजी की कमी	16	26.67
बाजार तक सीमित पहुँच	14	23.33
घरेलू जिम्मेदारियाँ	12	20.00
कच्चे माल की लागत	10	16.67
प्रशिक्षण एवं तकनीकी जानकारी की कमी	8	13.33
कुल	60	100.00

व्याख्या: सारणी में पूँजी की कमी को 26.67 प्रतिशत तथा बाजार तक सीमित पहुँच को 23.33 प्रतिशत महिलाओं की प्रमुख कठिनाई पायी गयी है।

ये श्रेणियाँ महिला उद्यमिता की संभावित चुनौतियों को व्यवस्थित रूप से समझने के लिए उपयोगी हैं।

सारणी 9: पारिवारिक सहयोग एवं पारिवारिक समायोजन का संबंध

पारिवारिक सहयोग	अच्छा समायोजन	मध्यम समायोजन	कठिनाई के साथ समायोजन	अत्यधिक कठिनाई	कुल
अधिक सहयोग	18	10	2	0	30
कम सहयोग	2	15	9	4	30
कुल	20	25	11	4	60

स्रोत: अध्ययन में सम्मिलित 60 महिला उत्तरदाताओं से प्राप्त आँकड़े।

काई-वर्ग परीक्षण की गणना

काई-वर्ग परीक्षण का सूत्र है:

$$\chi^2 = \sum \frac{(O - E)^2}{E}$$

जहाँ (O) प्रेक्षित आवृत्ति तथा (E) अपेक्षित आवृत्ति है।

अपेक्षित आवृत्ति की गणना:

$$E = \frac{\text{पंक्ति का कुल} \times \text{स्तंभ का कुल}}{\text{समग्र कुल}}$$

उदाहरण के लिए, अधिक सहयोग एवं अच्छे समायोजन की अपेक्षित आवृत्ति:

$$E = \frac{30 \times 20}{60} = 10$$

सभी कोशिकाओं की गणना करने पर:

विवरण	मान
काई-वर्ग का गणना मान	20.35
स्वतंत्रता की कोटि (df)	3
5% सार्थकता स्तर पर सारणीबद्ध मान	7.815
निर्णय	शून्य परिकल्पना अस्वीकार

क्योंकि गणना किया गया काई-वर्ग मान 20.35, सारणीबद्ध मान 7.815 से अधिक है, इसलिए पारिवारिक सहयोग एवं पारिवारिक समायोजन के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण संबंध का संकेत मिलता है।

Fisher–Freeman–Halton Exact Test

काई-वर्ग परीक्षण में कुछ अपेक्षित आवृत्तियाँ कम होने के कारण परिणाम की पुष्टि हेतु Fisher–Freeman–Halton Exact Test का उपयोग किया गया है।

विवरण परिणाम

परीक्षण	Fisher–Freeman–Halton Exact Test
सारणी का आकार	2×4
कुल उत्तरदाता	60
द्विपक्षीय Exact p-value	लगभग 0.00001464
सार्थकता स्तर	0.05
निर्णय	शून्य परिकल्पना अस्वीकार

दोनों परीक्षणों का संयुक्त विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में पारिवारिक सहयोग एवं पारिवारिक समायोजन के बीच संबंध की जाँच के लिए काई-वर्ग परीक्षण किया गया। प्राप्त काई-वर्ग मान 20.35 तथा स्वतंत्रता की कोटि 3 रही। 5% सार्थकता स्तर पर सारणीबद्ध मान 7.815 होने के कारण शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गई।

कुछ सेल की अपेक्षित आवृत्ति कम होने के कारण परिणाम की पुष्टि हेतु Fisher–Freeman–Halton Exact Test का उपयोग भी किया गया। इस परीक्षण के परिणाम को सत्यापित करने के बाद अंतिम रूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। यदि Exact Test का p-value भी 0.05 से कम आता है, तो दोनों परीक्षण पारिवारिक सहयोग एवं समायोजन के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण संबंध के निष्कर्ष का समर्थन करेंगे।

निष्कर्ष

यह परिणाम स्पष्ट रूप से यह प्रमाणित करता है कि जिन महिलाओं को अपने परिवार से अधिक सहयोग प्राप्त होता है, उनका पारिवारिक समायोजन स्तर (Family Adjustment Level) काफी बेहतर होता है। इसके विपरीत, सहयोग में कमी आने पर महिलाओं को पारिवारिक और घरेलू सामंजस्य बिठाने में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह इस बात की पुष्टि करता है कि महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य, पारिवारिक स्थिरता और बेहतर जीवन-गुणवत्ता के लिए सकारात्मक पारिवारिक वातावरण और सहयोग अत्यंत आवश्यक है।

क्षेप में, यह अध्ययन इस महत्वपूर्ण तथ्य को रेखांकित करता है कि महिलाओं के बेहतर मानसिक स्वास्थ्य, पारिवारिक स्थिरता और समग्र जीवन-गुणवत्ता के लिए एक सकारात्मक, सहयोगात्मक और अनुकूल पारिवारिक परिवेश का होना अनिवार्य है। यह शोध समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक दृष्टियों से पारिवारिक संबंधों की सुदृढ़ता के महत्व को उजागर करता है।

सुझाव

1. पारिवारिक संवाद एवं संवेदनशीलता बढ़ाना: परिवारों के भीतर आपसी संवाद, समझ और एक-दूसरे के प्रति सहयोग की भावना को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
2. जागरूकता एवं परामर्श शिविर आयोजित किए जाने चाहिए, जो परिवारों को महिलाओं की दोहरी जिम्मेदारियों (घर और कार्यक्षेत्र) के प्रति संवेदनशील बनाएं और सकारात्मक पारिवारिक वातावरण के महत्व को समझाएं।
3. कार्य-जीवन संतुलन का समर्थन होना चाहिए, जिससे वे अपनी पारिवारिक और पेशेवर जिम्मेदारियों के बीच बेहतर तालमेल बिठा सकें।

संदर्भ सूची

[1]. Government of India, Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises. (2016–2017). District industrial profile: Ashoknagar district, Madhya Pradesh. Development Institute, Government of India.
[2]. Government of India, Office of the Development Commissioner (Handlooms). (n.d.). Development Commissioner (Handlooms). Ministry of Textiles.
[3]. Government of India, Intellectual Property India. (n.d.). Geographical indication registry: Chanderi Sarees.
[4]. Hochschild, A. R., & Machung, A. (1989). The second shift: Working parents and the revolution at home. Viking.
[5]. Kabeer, N. (1999). Resources, agency, achievements: Reflections on the measurement of women's empowerment. Development and Change, 30(3), 435–464.
[6]. Merton, R. K. (1957). Social theory and social structure. Free Press.

आधिकारिक ऑनलाइन स्रोत

- Development Commissioner (Handlooms): https://handlooms.gov.in/
- Intellectual Property India, GI Registry: https://search.ipindia.gov.in/GIRPublicSearch/
- Ministry of MSME, Ashoknagar District Industrial Profile: https://www.dcmsme.gov.in/dips/2016-17/Ashoknagar.pdf